International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-11-2021, Accepted: 12-12-2021, Published: 27-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 101-103

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गाधी जी की भूमिका

प्रीती
शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, डीम्ड यूनीवर्सिटी आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
गांधी जी का जीवन प्रकाशपुंज के समान है। उन्होने अपने जीवन में कुछ आदशों को बहुत महत्व दिया जिनके बल पर ही अपने जीवन में विशिष्ट मुकाम हासिल किया। गांधी जी ने हमेशा अहिंसा के रास्ते पर चलने की सलाह दी। राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी हमेशा नई तालीम को जानने तथा उसे अपनाने के समर्थन में रहे है। शाकाहारी भोजन को गांधी जी ने अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया था।

मूलशब्द: भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, महात्मा गांधी, अहिंसा

प्रस्तावना
इन महापुरूष का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात में पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआा था। प्रति वर्ष 2 अक्टूबर गांधी जी का जन्म दिवस गांधी जयती के रूप में और पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है। गांधी जी का पूरा नाम मोहन दास था। आपके पिता का नाम कर्मचंद गान्धी था जो राजकोट में दीवान थे। माता पुतलीबाई धार्मिक स्वभाव वाली अत्यन्त सरल महिला थी। गांधी जी के व्यक्तित्व पर माता के चरित्र की छवि स्पष्ट दी। आप अपने माता पिता की सबसे छोटी संतान थे। आपका विवाह 1883 में 13 साल की उम्र में लगभग 6माह बडी कस्तूरबा से हुआ। गांधी जी के चार पुत्र थे हरिलाल मोहनदास गान्धी, रामदास गान्धी, मणिलाल गान्धी, देवदास गान्धी। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा "सत्य के साथ मेरे प्रयोग" में बताया है कि राजा हरिश्चन्द्र नाअक से मोहन दास के मन में सत्य निष्ठा के बीज पडे। गांधी जी के राजनितिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखले थे। गांधी जी की शुरूआती पढाई स्थानीय स्कूलों में हुयी। सन 1888 में गांधी जी वकालत की पढाई करने ब्रिटेन चले गये। 1891 में वकालत की पढाई पूरी करके वतन वापस आये और फिर सन 1893 में गुजराती व्यापारी शेख अब्दुल्ला के वकील के तौर पर काम करने के लिए अफ्रीका चले गये। अफ्रिका में प्रवासीयों के लिए कुछ सफल आन्दोंलन किए तथा सन 1915 में हमेशा के लिए भारत आकर देश की स्वतन्त्रता में अपना अमूल्य व अतुल्य योगदान दिया जो हम आगे पढेंगें। 30 जनवरी सन 1948 को नाथूराम गोडसे नामक कट्टरपंथी हिन्दू ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी। गांधी जी की मृत्यु के पश्चात भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जी ने सच ही कहा था, "हमारे जीवन से प्रकाश पुंज चला गया...." ।

गांधी जी द्वारा किये गये प्रमुख्य आन्दोलन
सर्वप्रथम गान्धी जी ने प्रवासी वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु सत्याग्रह करना शुरू किया। सन 1893 में गुजराती व्यापारी शेख अब्दुल्ला के वकील के तौर पर काम करने के लिए गांधी जी अफ्रीका गये थे। लेकिन वहां भारतीयों के साथ हो रहे भेदभाव को देखकर गांधी जी का मन विचलित हो उठा और इसी कारण से गांधी जी ने उनके अधिकारों के लिए संघर्ष किया और इस भेदभाव को समाप्त करने का संकल्प लिया। गांधी जी को स्वयं इस भेदभाव का शिकार होना पडा था। जब गांधी जी को काला भारतीय कहकर ट्रेन से नीचे उतार दिया था और उनके सामान को नीचे फेंक दिया। गांधी जी का हुआ ये अपमान उनके सीने में घर कर गयी। गांधी जी ने प्रवासी भरतीयों के साथ मिलकर एक संगठन बनाया और सत्याग्रह छेड़ दिया। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के सम्मान के लिए, भारतीयों के प्रतिबंधित स्थानों पर प्रवेश के लिए, गांधी जी ने आवाज बुलंद की और सन 1906 में दक्षिण अफ्रीका में अर्थात विदेशी धरती पर गांधी जी ने सत्त्याग्रह शुरू कर दिया। यह संधर्ष सात वषों तक चला। शोषण, अन्याय, रंग भेद की नीति के विरूद्ध ये संघर्ष 7 वषों तक चला और गांधी जी को सफलता मिली।
9 जनवरी सन 1915 को भारत लौटे। एक भारतीय बेरिस्टर के रूप में साउथ अफ्रीका से आने पर गांधी जी का बाम्बे के अपोलो बंदरगाह पर भव्य स्वागत हुआ। और तभी से 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय के रूप में मनाया जा रहा है। 1915 में गान्धी जी को सरकार की तरफ से "कैसर–ए–हिन्द" की उपाधी और स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। तत्पश्चात गांधी जीने देश भ्रमण किया और भारत की स्थिति का जायजा लिया। गांधी जी से लोगों को काफी उम्मीदें थीं क्यों कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए काफी संघर्ष किया था। इस दौरान गांधी जी को दक्षिण अफ्रीका में जेल यात्रा भी करनी पड़ी थी। गांधी जी ने भारत वासीयों को निराश नहीं किया और उनकी उम्मीदों पर खरे उतरे। सन 1916 के कांग्रेस अधिवेशन में वे पहली बार जवाहर लाल नेहरू जी से मिले वहीं बिहार के राजकुमार शुक्ल आए हुए थे। उन्होने गांधी जी को चंपारण के नील पैदा करने वाले किसानों की व्यथा बताई और किसी तरह उन्हें बिहार आने के लिए राजी कर लिया। सन 1917 में गांधी जी ने भारत में प्रथम आन्दोलन चम्पारण सत्याग्रह शुरू किया। जिसमें गांधी जी को सफलता मिली। गांधी जी ने नील की खेती करने वाले किसानों को गांधी जी ने कष्टकारी ब्रिटिश कानूनसे मुक्ति दिलाई। तभी अहमदाबाद में हैजा के प्रकोप की वजह से उन्है अपने आश्रम साबरमती आश्रम ले जाना पडा। तत्पश्चात अनुसुईया बेन साराभाई द्वारा गांधी जी को अहमदाबाद मिल मजदूरों के लिए आन्दोलन करने के लिए आमन्त्रित किया गया । साल 1918 में गांधी जी अहमदाबाद में मिल मजदूरों के हक के लिए लडाई लड रहे थे। तभी उन्है सूचना मिली कि गुजरात के खेडा में किसान भारी संकट में हैं। उनकी फसलें नष्ट हो गई हैं। फिर भी उनसे कर की वसूली की जा रही है। पिट्ठल भाई

पटेल और गांधी जी द्वारा जांच कराई गयी तो पता चला कि किसानों की गांगे बिल्कुल सही हैं। गांधी जी ने तुरन्त खेड़ा जाने का फेसला लिया। खेड़ा सत्याग्रह के लिए लोगों को सत्याग्रह का अर्थ समझाते हुए गांधी जी ने कहा कि सत्य के लिए आग्रह करना ही सत्याग्रह है। गांधी जी अहिंसा का नारा देते हुए बोले। "मैं आपको अपका हक दिलाऊगां पर एक शर्त है । अग्रेंजी सरकार आप पर डंडे बरसाये या गोलियां चलाये पर आप हिसां नहीं करेगें। यदि हिसां हुई तो में सत्या ग्रह छोड़ दूगां।" इसके परिणाम स्वरूप सरकार ने बिना किसी सार्वजनिक घोषणा किए ही गरीब किसानों से लगान वसूली बन्द कर दी।

अब गांधी जी भारतीय के महान व प्रमुख्य व्यक्तित्व बन गये थे। 26 जनवरी 1999 से देश में रालेक्ट आया। जिसका विरोध पूरे देश में चल रहा था। गांधी जी ने अपना सत्याग्रह रूपी हथियार का प्रयोग रोलेक्ट एक्ट के विरोध में करने का निश्चय किया गांधी जीने व्यापक हड़ताल का आह्वान किया। 24 जनवरी 1919के दिन गांधी जी ने मुम्बई में एक सत्याग्रह सभा का आयोजन किया और इसी सभा में तय किया गया कि रोलेक्ट एक्ट का विरोध सत्य व अहिंसा के मार्ग पर चल कर किया जायेगा। इस हड़ताल के दौरान कुछ सुधार वादी नेताओं की ओर से अहिंसा का विरोध किया गया इसी दौरान दिल्ली आदि कुछ स्थानों पर भारी हिंसा हुई। और गांधी जी ने सत्याग्रह को वापस ले लिया। 13 अप्रेल को सैफुद्दीन किचलू और यत्यपाल की गिफदारी के विरोध में अमृतसर के जलिया वाले बागमें लोगों की भीड़ इकट्ठी हूई। तभी अग्रंजो के फौजी कमान्डर जरनल डायर पर अन्धाधुन्ध गोलियां चलबाईं। जिसमें हजारों लोग मारे गए। उस भीड़ में महिलायें और बच्चे भी शामिल थे। यह घटना ब्रिटिश हुकूमत के काले अध्यायों में से एक हैं। जिसे जलिया वाला बाग हत्याकाण्ड के नाम से जाना जाता है। इस नरसंहार ने गांधी जी को विचलित कर दिया और उनको विद्रोही बना दिया। फिर गांधी जी ने कांग्रेस अधिवेशन में अग्रेंजों के खिलाफ असहयोग आन्दोलन की रणनिति तैयार की। और यहीं से गांधी जी ने अग्रेंजों के खलिाफ विद्रोह का ध्वज उठाया थ। 31 अगस्त 1920 को असहयोग आन्दोलन की शुरूआत हो गई। देश के मुश्लिमों ने भी असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया। वहीं हिन्दुओं ने खिलाफत आन्दोलन में बड़ चड़ के हिस्सा लिया। 1920 के मध्य तक खिलाफत आन्दोलन के नेता भी असहयोग आन्दोलन में जुड़ गये। अब ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिन्दू व मुश्लिमों का एकजुट मोर्चा तैयार हो गया और भारतीय आन्दोलन को मजबूती मिलीसरकारी आकड़े के मुताबिक 1921 में 396 हड़तालें हुई जिसमें 6 लाख श्रमिक शामिल थे इसमें 70 लाख कार्य दिवसो का नुकसान हुआ। सन 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद पहली बार इस आन्दोलन से अंग्रेजी शासन की नींव हिल गई। इसी दौरान 5 फरवरी 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रान्त के गोरखपुर के चोरी चौरा नामक स्थान पर एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसको आग के हवाले कर दिया। जिसमें पुलिसकर्मी जिन्दा जल गये। इसी हिंसक धटना के बाद गांधी जी ने तत्काल ही यह आंदोलन वापस ले लिया। कुछ समय बाद ब्रिटिश सरकार ने 10 मार्च 1922 को गांधी जी को देशद्रोह के आरोप में गिफदार कर लिया। गांधी जी के तीन लेखों को देश द्रोह का सबूत बनाया गया। गांधी जी को 6 साल की जेल हो गई। गांधी जी को जेल भेजना सरकार को महंगा पड़ गया। पूरी दुनियां में ब्रिटिश सरकार की आलोचना हुयी। और दो साल बाद ही ब्रिटिश सरकार को गांधी जी को छोड़ना पड़ा। इसके बाद 1924 में गांधी जी ने कांग्रेस के बेलगॉव अधिवेशन की अध्यक्षता की। तत्पश्चात बारदोली सत्याग्रह में सरदार बल्लम भाई पटेल का साथ दिया।

19 मार्च 1930 को गांधी जी ने 79 कार्यकरताओं के साथ मिल कर साबरमती आश्रम से लेकर समुन्द्र तट पर स्थित दाण्डी की ओर कूंच किया। 200 मील की यात्रा पैदल चलकर 24 दिन में पूरी की गई। 6 अप्रेल 1930 को प्रातः काल गांधी जी ने नमक बना कर नमक कानून को भंग किया। यहीं से शुरू होता है सविनय अवज्ञा आन्दोलन। किंतु आन्दोलन शुरू होने से पूर्व गांधी जी ने एक बार फिर सरकार से समझौता करने का प्रयत्न किया और 2 मार्च 1930 को लार्ड इरविन को पत्र लिखा जिसमें कुछ मांगों का उल्लेख किया था। उन्होने यह भी लिखा था कि यदि मॉगें पूरी न होने पर 12 को नमक कानून का उलंघन किया जायेगा। जिसका इरविन ने कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया तो गांधी जी ने आन्दोलन शुरू कर दिया। और धीरे–धीरे पूरे देश में आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। इसके बाद 5मई 1930 को गांधी जी को गिरफदार कर लिया गया साथ ही लगभग 60 हजार लोगों को जेल में डाल दिया। जिसका विरोध पूरे देश में होने लगा। तभी इरविन ने देश के वातावरण को शंत करने के लिए गांधी जी को 26 जनवरी 1931 को जेल से रिहा कर दिया। 5 मार्च 1931 को गांधी इरविन समझौता हुआ। जिसमें गांधी जी ने अपनी प्रमुख्य शर्ते रखीं और सविनय अवज्ञा आन्दोलन को स्थगित कर दिया। फिर गांधी जी ने लंदन पहुॅच कर द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया । यह सम्मेलन साम्प्रदायिक समस्या पर विवाद के कारण असफल रहा। जिसके कारण गांधी जी ने लंदन से वापस आकर पुनः 3 जनवरी 1932 को सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया।

जिसके पश्चात 4 जनवरी को गांधी जी और कांग्रेस अध्यक्ष सरदार बल्लम भाई पटेल को जेल में डाल दिया गया। तभी हरिजनों पर हिन्दुओं के द्वारा किये गये अन्यायों का पश्चाताप करने के लिए जेल में ही 8 मई 1933 को गांधी जी ने 21 दिन का उपवास शुरू किया। सरकार ने उसी गान्धी जी को जेल से छोड़ दिया। तभी गांधी जी ने दलितों के लिए हरिजन आन्दोलन की शुरूआत की। दलितों के लिए हरिजन शब्द का प्रयोग गांधी जी ने ही किया। हरिजन शब्द का अर्थ है – हरि / भगवान के बन्दे । इसी दौरान गांधी जी ने कहा– "या तो छुआ छूत को जड़ से समाप्त करो या मुझे अपने बीच से हटा दो। यह मेरी अन्तरात्मा की पुकार है, चेतना का निर्देश है। " गांधी जी ने "हरिजन" नामक साप्ताहिक पत्र का भी प्रकाशन किया। इसी बीच गांधी जी ने जन आन्दोलन को रोक दिया किन्तु व्यक्तिगत सत्याग्रह चलता रहा। सन 1934 में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन पूरी तरह समाप्त कर दिया। सन 1935 में गांधी जी का स्वस्थ्य बिगड गया जिसके इलाज हेतु वे बम्बई आये । कुछ समय पश्चात वे स्वस्थ हो गये। तत्पश्चात सन 1940 में गांधी जी ने विनोवा भावे को प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही चयनित किया। 8 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस की बैठक बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में हुई और भारत छोड़ो आन्दोलन को मंजूरी मिल गई और यहीं पर गांधी जी ने "करो या मरो" का नारा दिया। 9 अगस्त 1942 को गांधी जी ने भारत छोड़ो आन्दोलन की शुरूआत की। गांधी जी के आह्वान पर यह आन्दोलन पुरे देश में एक साथ आरंभ हुआ। भारत छोडो की शुरूआत होते ही अगले ही दिन गांधी जी को बंदी बना लिया गया। जिसके कारण देश में हिंसा भड़क गई। यह लड़ाई दो साल तक चली। इसे अगस्त क्रान्ति के नाम से भी जाना जाता है। उसी समय द्वितीय विश्व भी युद्ध चल रहा था। 1944 में जब विश्व युद्ध समाप्ति की ओर था तभी गांधी जी को रिहा कर दिया गया। 15 अगस्त 1947 में भारत आजाद हुआ और भारत को दो भागों भारत और पाकिस्तान में विभाजित किया जा चुका था। 15 अगस्त को जब पूरे देश में खुशी का माहौल था लेकिन गांधी जी ने उत्सव में भाग नहीं लिया उस समय वे कलकत्ता में थे और उन्हौने 24 घण्टे का उपवास रखा था। क्यों कि देश दो भागों में बट गया था। कलकत्ता शहर हिन्दू– मुश्लिम दगों की आग में जल रहा था। गांधी जी ने हिन्दुओं और मुश्लिमों के बीच हो रही

सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए अनशन किया। 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे द्वारा गांधी जी की गोली मार कर हत्या कर दी। वे नई दिल्ली के बिड़ला भवन में चहलकदमी कर रहे थे। गांधी जी रोज शाम को प्रार्थना किया करते थे। 30 जनवरी की शाम को जब गांधी जी संध्याकालीन प्रार्थना के लिए जा रहे थे तभी नाथूराम गोडसे ने आकर पहले उनके पैर छुए और फिर सामने से उन पर बैटेरा पिस्तौल से तीन गोलियां चलाईं सिसे गांधी जी की मृत्यु हो गई। उस समय गांधी जी अपने अनुचरों से घिरे हुए थे। गांधी जी के मुख से निकले आखिरी शब्द थे–हे राम, हे राम, हे राम....।

उपसंहार

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी भारत एवं भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के एक प्रमुख्य राजनितिक एवं आध्यात्मि नेता थे। गांधी जी ने जो हमारे देश के लिए किया वह अवर्णनीय है। उनके सक्रिय एवं महान योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। गांधी जी ने सत्य, अहिंसा और शांति से अग्रेंजों को हिला कर रख दिया और उन्है भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया, इसका कोई दूसरा उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता है। इसी कारण संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2007 में 2 अक्टूबर गांधी जयन्ती को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। गांधी जी के आदर्श वाक्य : बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत करो। जो हमें सत्य व शान्तिपूर्ण रास्ते पर जीवन जीने की ओर प्रेरित करते है। गांधी जी एक अच्छे नेता के साथ एक अच्छे लेखक भी थे। उन्होने कई पुस्तकें लिखी। उनका जीवन संघर्ष भरा होने के बाबजूद भी उन्होने लिखना नहीं छोडा। गांधी जी ने हरिजन, इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया, हिन्द स्वराज, ग्राम स्वराज, सत्य के साथ मेरे प्रयोग की कहानी/ एक आत्मकथा, स्वस्थ्य की कुंजी, मेरे सपनों का भारत, आदि। गांधी जी की प्रमुख्य में से एक है "मेरे सपनों का भारत"। इस किताब में गांधी जी के लेखन और भाषणों के अनुच्छेदों का संग्रह है।
गांधी जी के बारे में प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा –"हजार साल बाद आने वालीं नस्लें इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगीं कि हाड़–मांस से बना ऐसा कोई इंसान भी धरती पर कभी आया था"।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह अयोध्या 2007, समाजवादःभारतीय जनता का संग्राम, पब्लिकेशन, अनामिका डिस्टीब्यूटर्स, अंसारी रोड नई दिल्ली।
2. अग्रवाल पी. के., अग्रवाल शिप्रा, 2010, गांधी–विचार और हम, प्रकाशन, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
3. शर्मा महेश, 2012,स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन, पब्लिकेशन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. अहमद राजी, 2016, गांधी जी की स्वदेश वापसी के 100 वर्ष, पब्लिकेशन, प्रभात प्रकाशन , नई दिल्ली।
5. स्वरूप देवेंद्र, 2007,राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन का इतिहास, पब्लिकेशन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. गांधी जी के सपनों का भारत, 2007 प्रकाशन, ज्ञान गंगा, नरूला प्रिटिंग प्रेस नई दिल्ली।
7. रोलां रोमां, 2008 महात्मा गांधी जीवन और दर्शन, प्रकाशन लोक भारती , इलाहाबाद।
8. https:book.google.co.in.books
9. https://www.india.gov.com
10. https://navbharattime.indiatime.com
11. https://www.jagranjosh.com